सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 34
अष्टम् अंक
मार्च 2021

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
18 राष्ट्रीय परिदृश्य
23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
29 क्रीड़ा जगत्
31 भूमि वर्गीकरण– बंजर भूमि एटलस–2019 : प्रमुख तथ्य
32 विज्ञान समाचार
33 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
34 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
38 सारभूत तत्व कोष

लेख

42 जल-संसाधन लेख– वर्षा जल संग्रहण की जरूरत, तकनीकें एवं सम्भावनाएं
44 वित्तीय लेख– डिजिटल मुद्रा : आज की आवश्यकता
45 सामयिक लेख–भारत के विरोध के बावजूद गिलगिट बाल्टिस्तान में चुनाव
47 जैव-प्रौद्योगिकी लेख–आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं कृषि क्षेत्र में सम्भावनाएं
48 प्रौद्योगिकी लेख–इंडिजेन कार्यक्रम : स्वास्थ्य रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम
50 अंतरिक्ष लेख–मोबाइल-टीवी सिग्नल बढ़ाने में मददगार होगा सीएमएस-01 संचार उपग्रह
51 आधारिक संरचना लेख– डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर: अर्थव्यवस्था के पावर बूस्टर
53 कृषि लेख–(i) गिरता मृदा स्वास्थ्य : एक चुनौती
55 (ii) हरित क्रांति और कृषि विविधता में कमी
56 संचार लेख–पीएम वाणी : इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिए क्रांतिकारी कदम
57 कॅरियर सलाह
59 सामाजिक-आर्थिक लेख– जनवरी 2020 से दिसम्बर 2020 के दौरान उद्योग जगत् की बड़ी घटनाएं

हल प्रश्न-पत्र

62 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2019
70 एस.एस.सी. हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2019
80 दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड सहायक शिक्षक (प्राइमरी) भर्ती परीक्षा, 2019
95 बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा, 2019
99 राजस्थान कनिष्ठ अनुदेशक (मैकेनिक डीजल इंजन) सीधी भर्ती परीक्षा, 2019

मॉडल हल प्रश्न-पत्र

104 आगामी केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
109 आगामी मध्य प्रदेश में समूह-2 उपसमूह-4 के अन्तर्गत सहायक संपरीक्षक, कनिष्ठ सहायक एवं डाटा एंट्री ऑपरेटर व अन्य पदों की संयुक्त भर्ती परीक्षा–2020 हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

120 आरआरबी/एनटीपीसी परीक्षा के फेस-I में पूछे गए सामान्य जागरूकता के प्रश्न
124 वर्षांत समीक्षा 2020–कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
127 क्या आप परिचित हैं ?
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

प्रकृति से प्रेरणा ग्रहण कीजिए

"प्रकृति के चरण-चिह्नों पर चलो. धैर्य उसका रहस्य है."

—इमर्सन

घने वृक्षों के समुदाय को देखकर वह यकायक चिल्ला उठी—"आह कितना मनोरम दृश्य है ?" वृक्षों की भीड़ को देखकर मन हरा-भरा हो जाता है, जबकि मनुष्यों की भीड़ को देखकर जी घबरा उठता है और हम भाग कर खुली हवा में जाना चाहते हैं. आप तुरन्त सहमति प्रकट करते हुए कहेंगे कि प्रकृति का उन्मुक्त वातावरण किसको नहीं सुहाता है ? प्रकृति के वन, वृक्षों, उन पर लगे हुए फूलों की सुगंध, उन पर बैठे पक्षियों का कलरव मन को निहाल कर देता है. ऐसा प्रतीत होता है कि मानव साहचर्य की अपेक्षा प्रकृति का साहचर्य हमारे स्वभाव के अधिक अनुकूल है. हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्द ने एक स्थान पर लिखा है कि साहित्य में आदर्शवाद का वही स्थान है, जो जीवन में प्रकृति का स्थान है. हम जब बाहर की घुटन, ऊब, दुर्गन्ध एवं कुण्ठा भरे जीवन से ऊब जाते हैं, तब खुली हवा पाने के लिए किसी वन, उपवन अथवा उद्यान में जाना चाहते हैं, उसी प्रकार जीवन की विषमताओं एवं विडम्बना से युक्त काव्य की ऊब एवं घुटन मिटाने के लिए हम आदर्शवाद की ओर देखते हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि माता की गोद की भाँति प्रकृति हमारे लिए सुख-चैन-प्रदाता एवं संकटमोचन क्रोड़ का विधान करती है. वह सचमुच परमात्मा की कलाकृति है. उसी ने मानव को कला की प्रेरणा प्रदान की है. प्लेटो, अरस्तू आदिक प्राचीन दार्शनिक काव्यशास्त्रियों ने कला को प्रकृति का अनुकरण बताया है. प्रकृति में सुनाई देने वाली विविध ध्वनियों के आधार पर ही संगीत के सप्तस्वरों का विधान एवं नामकरण किया गया है. कवीन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में "प्रकृति ईश्वर की शक्ति का क्षेत्र है और जीवात्मा उसके प्रेम का क्षेत्र है."

प्रकृति में प्रत्येक कार्य एक विशेष नियमानुसार होता है. हमारा समस्त भौतिक विज्ञान उसके नियमों के उद्‌घाटन का विनम्र प्रयास है तथा मानव की आचार संहिताएं उसकी नियमित एवं अविचल प्रक्रियाओं के साक्षात्कार के महोत्सव का दिव्य संगीत है. प्रकृति हमें अनुशासन में रहने का पाठ पढ़ाती है. प्रकृति एक अनुशासन में चलती है और एक शिक्षिका की भाँति मानव को भी अनुशासन की शिक्षा देती है. ऋतुचक्र एक निश्चित अनुशासन का अनुवर्तन करता है. 'हुकुम बिना न झूले पाता' वाली उक्ति प्रकृति में व्याप्त अनुशासन की ही ओर इंगित करती है.

●●●